

VISIT OF DG, ICFRE AT ICFRE- ERC PRAYAGRAJ

Sh. Arun Singh Rawat, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun, the highest officer of forestry research in India visited ICFRE-Eco Rehabilitation Centre, Prayagraj and Chaired "Brainstorming on Forestry Research Priorities in Eastern Uttar Pradesh" on 1st March 2022 in the newly designated 'Saraswati Sammelan Kaksh' of the Centre.



Dr. Sanjay Singh, Head ICFRE-ERC while welcoming the dignitaries present, gave information about the new research schemes started by the Centre in different districts of UP which include identified suitable clones of Eucalyptus, Poplar and *Melia Dubia*, introduction and trials of Agar (*Aquilaria malaccensis*) and new bamboo species from North East, promotion of sandalwood cultivation etc.



In his keynote address DG ICFRE called upon the research institutions' to have efficient coordination with the state forest department and industries necessary for carrying out solution based high priority research to make an impact. Director General also released a book entitled "Poplar Farming" by Anita Tomar and Sanjay Singh on the occasion. In this connection he briefed the print and electronic media sequence that a MoU was being signed between State Forest Department UP and Forest Research Institute, Dehradun with the objective to promote forestry and increase farmer's income in the State.

Later Sh. Rawat inaugurated the newly constructed 'Forestry Training Facility' for the farmers and Bambusetam at the Central Nursery, Padila. He congratulated the Centre for establishing Uttar Pradesh's largest bamboo garden, enriched by 42 bamboo species from all over India. Apart from Forest officials and academicians, senior scientists of the center Dr. Anita Tomar, Dr. Kumud Dubey, Sh. Alok Yadav, Dr. Anubha Srivastava along with officials, staff and scholars attended the programme.









हिन्दुस्तान

पौधशाला में मिलेंगी बांस की 42 प्रजातियां

गोष्टी

प्रयागराज वरिष्ठ संवाददाता। वन अनुसंधान केंद्र की ओर से बांस की 42 प्रजातियों की केंद्रीय पौधशाला का लोकार्पण बुधवार को किया गया। पड़िला में तैयार यह पौधलाशा प्रदेश की पहली ऐसी पौधशाला होगी, जहां इतनी प्रजापितयों के बांस मिलेंगे। अनुसंधान के महानिदेशक व वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय देहरादून के कुलाधिपित अरुण सिंह रावत ने इसका लोकार्पण किया। इससे पहले पहले नया कटरा स्थित कार्यालय में गोष्टी का आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा कि आज किसानों की आय को बढ़ाने के लिए नई तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा। ऐसे में हमें जरूरत है कि वन विभाग से बेहतर समन्वय बनाएं। ऐसे स्थल जहां पर पौधों को रोपा जा सकता है, वहां के लिए जमीन तैयार करें। जरूरत पड़ने पर पेड़ की बीमारी, मिट्टी की गुणवत्ता की जांच की जाए। केंद्र प्रमुख डॉ.



भारती वानिकी अनुसंधान एवं पारी पुनर्रश्यापन संस्थान में आयोजित गोष्ठी में महानिदेशक को पौधा देते डॉ. संजय सिंह। • हिन्दुस्तान

फॉर्मिंग पुस्तक का किया विमोचन

प्रयागराज। महानिदेशक एएस रावत ने संस्थान के प्रमुख डॉ. संजय सिंह व डॉ. अनीता तोमर की पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक में नई तकनीक पर विस्तार से बताया गया है।

संजय सिंह ने मौजूद लोगों को नवीन शोध योजनाओं की जानकारी दी, जिनमें अगर, चंदन, पूर्वोत्तर से लाई गई बांस की नई प्रजातियों जिसमें मीलिया डूबिया, यूकेलिप्टस व पॉपलर आदि के क्लोन प्रमुख रहे। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता आदि मौजूद रहे।

पौधशाला में ये हैं प्रमख

- पड़िला में तैयार प्रदेश की पहली पौधशाला का महानिदेशक ने किया लोकार्पण
- कृषि वानिकी को बढ़ाने के लिए वन विभाग से समन्वय : अरुण सिंह रावत

महानिदेशक ने निरीक्षण कर जानीं समस्या

महानिदेशक ने बुधवार को संस्थान का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने शोधार्थियों से उनकी समस्याओं व शोध के बारे में जानकारी ली। सभी को आश्वस्त किया कि जो भी जरूरतें हैं, उसे पूरा कराया जाएगा। महानिदेशक ने कहा कि वैज्ञानिकों की कमी कभी भी शोध में बाधा नहीं बनेगी।

प्रजातियाः केंद्रीय पौधशाला में आसाम के बंबुआ हेमिल्टोनी और दुलूवा, त्रिपुरा के ओलेवरी और पॉलीमॉर्फा, मध्य प्रदेश से मीठा बांस, केरल के ऑकलैंड्रा और अफ्रीका के नाइग्रा आदि बांस के पौधे लगाए गए हैं।

पेड़ों की खेती से दोगुनी होगी आय

जागरण संवाददाता, प्रयागराज :
पूर्वांचल में फसलों के साथ पेड़ों
की खेती की जा सकती है। यहां
की मिट्टी इसके लिए उपयुक्त
है। पेड़ों की खेती (कृषि वानिकी)
करके किसान अपनी आय दोगुनी
कर सकते हैं। इस तरह की खेती
पश्चिमी यूपी, उत्तराखंड, पंजाब,
हरियाणा और गुजरात के किसान
कर रहे हैं। ये बातें भारतीय वानिकी
अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून
के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने
कही। उन्होंने कहा कि पेड़ों की खेती
से किसानों के आय बढ़ने के साथ
ही पर्यावरण भी प्रदूषणमुक्त होगा।

कृषि वानिकी के प्रति किसानों को जागरूक करने के लिए बुधवार को पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र लाजपत राय मार्ग न्य कटरा में



भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानदिशक अरुण सिंह रावत •जागरण

संगोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि अरुण सिंह रावत ने कहा कि कई राज्यों के किसान कृषि वानिकी से अच्छी कमाई कर रहे हैं। इसके लिए बगीचा बनाने की जरूरत नहीं है। खेती के साथ ही मेड़ पर या कुछ मीटर के अंतर पर इसे लगा सकते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वांचल के

किसान युकेलिप्टस, पापलर, गम्हार, मीलिया डूबिया, चंदन आदि की खेती करके आय में बढ़ोतरी कर सकते है। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि कृषि वानिकी के लिए किसानों को लगातार जागरूक किया जा रहा है। महानिदेशक ने वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा पापलर फार्मिंग पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया। इसके बाद उन्होंने पडिला में तैयार की केंद्रीय पौधशाला का लोकार्पण किया। पौधशाला में बांस की 42 प्रजातियों तैयार की गई है। उत्तर प्रदेश की यह सबसे बडी बांस वाटिका है। इस मौके पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर, डा. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डा. अनुभा श्रीवास्तव, डा. एसडी शक्ला, रतन गप्ता, अंकर रहे।

वन विभाग एवं उद्योगो के साथ समन्वय आवश्यक : अरुण सिंह रावत

कार्यकम प्रतिनिधि

प्रयागराज। भारत में वानिकी अनुसन्धान के सर्वोच्च अधिकारी अरुण सिंह रावत, भा. व. से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून की उपस्थिति में भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज के सरस्वती सम्मलेन कक्ष में पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी अनुसन्धान सम्बंधित प्राथमिकताओं पर मंथन विषय पर चर्चा की गयी। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए केन्द्र द्वारा उत्तर प्रदेश में शुरू की गयी नवीन शोध योजनाओं की जानकारी प्रदान की जिनमे अगर, चन्दन, पूर्वीत्तर से लायी गयी नयी बाँस प्रजातियों, मीलिया डूबिया, यूकेलिप्टस तथा पॉपलर आदि के क्लोन प्रमुख रहे। डॉ. सिंह ने कहा कि इससे क्षेत्र के किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होगी। कार्यक्रम विषय पर चर्चा करते हुए महानिदेशक ए. एस. रावत तथा वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा पॉपलर फार्मिंग आधारित पुस्तक का विमोचन किया गया। ए.एस. रावत द्वारा केंद्रीय पौधशाला, पडिला में किसानों के लिए नवनिर्मित वानिकी प्रशिक्षण

स्थल का लोकार्पण किया गया साथ ही केंद्रीय पौधशाला में 42 बॉस प्रजातियों से

अनुसन्धान संस्थान, कानपुर तथा वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादुन के मध्य



समृद्ध उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी बाँस वाटिका की स्थापना के लिए केन्द्र की सराहना करते हुए उसका लोकार्पण भी किया। महानिदेशक ए. एस. रावत ने अपने उद्बोधन में केन्द्र के वैज्ञानिकों को वानिकी अनुसन्धान द्वारा किसानों के लाभ को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग तथा उद्योगों के साथ समन्वय बनाकर चलने का आह्वान किया। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि राज्य वन

एक समझौता होना सुनिश्चित हुआ है। जिसका मुख्य उद्देश्य वानिकी तथा किसान की आय को बढ़ाना है। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एस. डी. शुक्ला, रतन गुप्ता, अन्य सहकर्मी एवं विभिन्न शोध छात्र - छात्राएं आदि मौजूद थे।

फसलों के साथ पेड़ों की खेती से दोगुनी होग

पूर्वांचल में फसलों के साथ पेड़ों की खेती की जा सकती है. यहां की मिट्टी इसके लिए उपयुक्त है. पेड़ों की खेती (कृषि वानिकी) करके किसान अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं. इस तरह की खेती पश्चिमी यूपी, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाण और गुजरात के किसान कर रहे हैं. यह बातें भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादन के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने कही. उन्होंने कहा कि पेड़ों की खेती से किसानों के आय बढ़ने के साथ ही पर्यावरण भी प्रदूषण मुक्त होगा.

बांस की 42 प्रजातियां तैयार

कृषि वानिकी के प्रति किसानों को जागरूक करने के लिए बुधवार को पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र लाजपत राय मार्ग न्यू कटरा में संगोष्ठी हुई. इसमें मुख्य अतिथि अरुण सिंह रावत ने कहा कि कई राज्यों के किसान कृषि वानिकी से अच्छी कमाई कर

रहे हैं. इसके लिए बगीचा बनाने PRAYAGRAJ (1 March): की जरूरत नहीं है, खेती के साथ ही मेड़ पर या कुछ मीटर के अंतर पर इसे लगा सकते हैं. उन्होंने कहा कि पूर्वांचल के किसान यूकेलिप्टस, .पापलर, गम्हार, मीलिया डुबिया. चंदन आदि की खेती करके आय में बढ़ोतरी कर सकते है. केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि कृषि वानिकी के लिए किसानों को लगातार जागरूक किया जा रहा है. कई किसानों ने इसकी शुरुआत कर दी है. इस मौके पर महानिदेशक ने वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा पॉपलर फार्मिंग पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया. इसके बाद उन्होंने पड़िला में तैयार की केंद्रीय पौधशाला का लोकार्पण किया. पौधशाला में बांस की 42 प्रजातियों तैयार की गई है. उत्तर प्रदेश की यह सबसे बड़ी बांस वाटिका है. इस मौके पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर, डा. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डा. अनुभा श्रीवास्तव, डा. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता, अंकुर श्रीवास्तव आदि थे.

www.janexpresslive.com/epaper

राज्य वन विभाग एवं उद्योगों के साथ समन्वय जरूरी: अरुण सिंह रावत

जन एक्सप्रेस । प्रयागराज

भारत में वानिकी अनुसन्धान के सर्वोच्च अधिकारी अरुण सिंह रावत, भा. व. से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून की उपस्थिति में भा.वा. अ.शि. प. पारि स्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज के सरस्वती सम्मलेन कक्ष में पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी अनुसन्धान सम्बंधित प्राथमिकताओं पर मंथन विषय पर चर्चा की गयी। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए केन्द्र द्वारा उत्तर प्रदेश में शुरू की गयी नवीन शोध योजनाओं की जानकारी प्रदान की। अगर, चन्दन, पूर्वोत्तर से लायी गयी नयी बाँस प्रजातियों, मीलिया डूबिया, यूकेलिप्टस तथा पॉपलर आदि के क्लोन प्रमुख रहे। डॉ. सिंह ने कहा कि इससे क्षेत्र के किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होगी। कार्यक्रम विषय पर चर्चा करते हुए महानिदेशक ए. एस. रावत तथा वरिष्ठ



वैज्ञानिकों द्वारा पॉपलर फार्मिंग आधारित पुस्तक का विमोचन किया गया। ए.एस. रावत द्वारा केंद्रीय पौधशाला, पडिला में किसानों के लिए नवनिर्मित वानिकी प्रशिक्षण स्थल का लोकार्पण किया गया। इस दौरान केंद्रीय पौधशाला में 42 बाँस प्रजातियों से समृद्ध उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी बाँस वाटिका की स्थापना के लिए केन्द्र की सराहना करते हुए उसका लोकार्पण भी किया। महानिदेशक ए. एस. रावत ने अपने उद्बोधन में केन्द्र के वैज्ञानिकों को वानिकी अनुसन्धान द्वारा किसानों के लाभ को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग तथा उद्योगों के साथ समन्वय बनाकर चलने का आह्वान किया। बताया कि राज्य वन अनुसन्धान संस्थान, कानपुर तथा वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून के मध्य एक समझौता होना सुनिश्चित हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य वानिकी तथा किसान की आय को बढ़ाना है। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉश अनीता तोमर, डॉशकुमुद दुबे, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉश एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता, सहकर्मी एवं विभिन्न शोध छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

अमृत कल्या टाइम्स

_{याज्य} क्वा व्याचिमाग एवं उद्योगो के साथ

समन्वय आवश्यकः अरुण सिंह रावत



राज्य वन विभाग एवं उद्योगों के साथ समन्वय आवश्यक : अरुण सिंह रावत

प्रधागराज। भारत में वानिकी अनुसन्धान के सर्वोच्च अधिकारी अरुण सिंह रावत, भा व. से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून की उपस्थिति में भा वा.ज.शि.ध. पारिस्थितिक पुनंस्थापन केन्द्र, प्रधागराज के सरस्वती सम्मठेन कक्ष में पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी अनुसन्धान सम्बंधित प्राधानिकताओं पर मंधन विषय पर चर्चा की गयी। केन्द्र प्रमुख हों. संजय सिंह ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का स्थापत करते हुए केन्द्र हाय उत्तर प्रदेश में शुक्त की गयी नीवी शोध योजनाओं की जानकारी प्रदान की जिनमें अगर, चन्दन, पूर्वोत्तर से लावी गयी नयी बेंस प्रजातियों, मीठिया हुबिया, यूकेिकटस तथा पॉफ्टर आदि के केनिकानों की आद में बढ़ोत्तरि होगी। कार्यक्रम



किसानों के लिए नविनित विनिक्त शिक्षण स्था का कोकार्यण किया गया साथ से केंग्रेय परिशाला में 22 विन हाता आवारी केंग्रिय परिशाला में 22 विन हाता आवियों से समृद्ध उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी बॉस वाटिका की स्थापना के को वानिकी अनुनन्धान द्वारा किसानों के लाभ को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य वन त्रियाग तथा उत्तरी के साथ समन्य बनाकर चलने का आहान किया। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि राज्य वन अनुस्त्यान संस्थान, कानपुर तथा वन अनुस्त्यान संस्थान, देहरादून के मध्य एक समझौता होना सुनिश्चित हुआ है। जिसका मुख्य उद्येश्य वानिकी तथा किसान की आय का बढ़ाना है। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक हाँ अनीता तोमर, डॉ. कुम्यू दूबे, आलोक यावत, डॉ. अनुमा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एस. डी. शुक्ला, रतन गुप्ता, अन्य सहकमी एवं विभिन्न शोध छात्र - छात्रार्थ आदि उपस्थित रहे।